

वैकल्पिक परिवार और विवाह के पैटर्न एवं संरचना

प्रस्तावना

समाज में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और कानूनी परिवर्तनों के कारण परिवार और विवाह की पारंपरिक संरचना में परिवर्तन आया है। आज परिवार केवल पारंपरिक संयुक्त या एकल परिवार तक सीमित नहीं है। विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार परिवार और विवाह के वैकल्पिक स्वरूप (Alternative Family and Marriage Patterns) विकसित हुए हैं। ये स्वरूप परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, आर्थिक परिस्थितियों और बदलती सामाजिक मान्यताओं को दर्शाते हैं।

1. वैकल्पिक परिवार का अर्थ

वैकल्पिक परिवार से आशय ऐसे पारिवारिक स्वरूपों से है जो पारंपरिक विवाह-आधारित परिवार से अलग होते हैं, लेकिन उनमें भावनात्मक सहयोग, देखभाल, जिम्मेदारी और सामाजिक संबंधों की भूमिका हो सकती है।

2. वैकल्पिक परिवार के प्रमुख पैटर्न

(1) एकल अभिभावक परिवार (Single Parent Family)

इसमें बच्चों की देखभाल मुख्य रूप से माता या पिता में से कोई एक करता है। इसका कारण तलाक, अलगाव, मृत्यु या अन्य पारिवारिक परिस्थितियाँ हो सकती हैं।

(2) पुनर्गठित या मिश्रित परिवार (Blended Family)

जब तलाक या पूर्व विवाह के बाद व्यक्ति पुनर्विवाह करता है और दोनों पक्षों के बच्चे एक साथ रहते हैं, तो ऐसा परिवार पुनर्गठित परिवार कहलाता है।

(3) दत्तक परिवार (Adoptive Family)

जब कोई व्यक्ति या दंपति कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे को गोद लेकर उसका पालन-पोषण करता है, तो उसे दत्तक परिवार कहा जाता है।

(4) पालक परिवार (Foster Family)

ऐसे परिवार में किसी बच्चे की देखभाल कुछ समय के लिए की जाती है, विशेषकर तब जब बच्चा अपने जैविक परिवार के साथ नहीं रह सकता।

(5) एकल व्यक्ति परिवार (Single-Person Household)

इसमें व्यक्ति अकेले रहता है और अपने आर्थिक तथा सामाजिक जीवन का स्वयं प्रबंधन करता है।

(6) सहजीवन आधारित परिवार (Cohabiting Family)

कुछ वयस्क विवाह किए बिना एक साथ रहकर घरेलू और भावनात्मक जीवन साझा करते हैं। इसकी सामाजिक और कानूनी स्थिति देश के कानून और परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

(7) विस्तारित परिवार (Extended Family)

इसमें माता-पिता और बच्चों के अतिरिक्त दादा-दादी, चाचा-चाची, अन्य रिश्तेदार आदि भी एक ही परिवार या घरेलू व्यवस्था से जुड़े हो सकते हैं।

3. विवाह के वैकल्पिक पैटर्न

(1) एकविवाह (Monogamy)

एक समय में एक व्यक्ति का एक जीवनसाथी होना एकविवाह कहलाता है।

(2) पुनर्विवाह (Remarriage)

विधवा, विधुर, तलाक या वैवाहिक संबंध समाप्त होने के बाद दोबारा विवाह करना पुनर्विवाह कहलाता है।

(3) अंतर्जातीय विवाह

विभिन्न जातियों के व्यक्तियों के बीच होने वाला विवाह अंतरजातीय विवाह कहलाता है। यह सामाजिक गतिशीलता और बदलती वैवाहिक पसंद से जुड़ा है।

(4) अंतरधार्मिक विवाह

अलग-अलग धार्मिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के बीच विवाह को अंतरधार्मिक विवाह कहा जाता है।

(5) देर से विवाह (Late Marriage)

शिक्षा, रोजगार, आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत लक्ष्यों के कारण कुछ लोग विवाह अपेक्षाकृत अधिक उम्र में करते हैं।

(6) स्वैच्छिक अविवाहित जीवन

कुछ व्यक्ति विवाह न करने का व्यक्तिगत निर्णय लेते हैं और स्वतंत्र रूप से जीवन व्यतीत करते हैं।

4. वैकल्पिक परिवार एवं विवाह की बदलती संरचना

इन परिवर्तनों के कारण परिवार की संरचना में निम्न बदलाव दिखाई देते हैं—

परिवार का आकार छोटा होना।

पति-पत्नी दोनों का रोजगार में शामिल होना।

परिवार में निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी बढ़ना।

बच्चों की देखभाल के तरीकों में परिवर्तन।

विवाह में व्यक्तिगत पसंद और सहमति का महत्व बढ़ना।

तलाक और पुनर्विवाह की सामाजिक स्वीकृति में परिवर्तन।

परिवार में भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का पुनर्वितरण।

रिश्तेदारी एवं परिवार की पारंपरिक भूमिकाओं में परिवर्तन।

5. वैकल्पिक परिवारों के सामने चुनौतियाँ

इन परिवारों को सामाजिक स्वीकृति, आर्थिक सुरक्षा, बच्चों की देखभाल, भावनात्मक समायोजन, कानूनी अधिकारों तथा सामाजिक भेदभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। विशेष रूप से एकल अभिभावक परिवारों और पुनर्गठित परिवारों में जिम्मेदारियों का संतुलन एक महत्वपूर्ण चुनौती हो सकता है।

निष्कर्ष

वैकल्पिक परिवार और विवाह के पैटर्न आधुनिक समाज में हो रहे सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। परिवार की संरचना अब केवल एक पारंपरिक स्वरूप तक सीमित नहीं रही है। विभिन्न प्रकार के परिवार अपनी परिस्थितियों के अनुसार भावनात्मक सहयोग, देखभाल, सामाजिकरण और जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हैं। इसलिए समाज कार्य के दृष्टिकोण से प्रत्येक परिवार की परिस्थितियों, आवश्यकताओं और अधिकारों को समझना आवश्यक है।